रिपोर्ट

स्थानीय समाज की भागीदारी बढ़ाएँ

दशाश्वमेध घाट पर हुए विस्फोट के कारणों, नतीजों और समाज की ज़रूरतों को लेकर चल रही बहस को समाजोपयोगी और प्रभावी बनाने की दृष्टि से वाराणसी के कई संगठनों और संस्थाओं ने मिलकर 19 दिसम्बर 2010 की शाम को घटनास्थल पर एक सभा की। सर्वप्रथम 7 दिसम्बर की शाम को हुए विस्फोट में दिवंगत बच्ची स्वस्तिका और बाद में अस्पताल में मृत्यु को प्राप्त महिला को सभी ने दो मिनट मौन रह कर श्रद्धांजलि दी।

अधिकांश वक्ताओं ने सुरक्षा को लेकर चल रही बहस को मूल मुद्दे से भटकाने वाला बताया और आम जनता की मौलिक ज़रूरतों का संदर्भ लिये बगैर चलने वाली बहसों को बे–मानी बताया। यह कहा गया कि सुरक्षा के नाम पर घाटों की घेरेबन्दी करके नाविकों, छोटे–छोटे दुकानदारों, माला–फूल–दिये, खान–पान का सामान जैसी तमाम वस्तुओं के फेरीवालों, नाइयों, भिक्षुकों, जैसे सभी लोगों को भगाकर उनकी रोजी–रोटी छीनना सर्वथा निन्दा योग्य है तथा यह कि ऐसे जन–विरोधी प्रशासनिक कदमों का सक्षम विरोध किया जाना चाहिये। वक्ताओं ने आरती की सुरक्षा के नाम पर लोगों को दबाने और भगाने में बड़ा धंधा करने वालों का फायदा बताया और कारपोरेट दुनिया की वैश्वीकरण के अन्तर्गत बाजार विस्तारवादी नीति का हिस्सा बताया।

कारको की चर्चा में वक्ताओं ने इण्डियन मुजाहिद्दीन या हिन्दुत्ववादी संगठनों पर आरोप मढ़ कर साम्प्रदायिकता की बात केन्द्र में लाने वाले प्रयासों को गलत और बहकाने वाला बताया। कहा गया कि इस विस्फोट की विशेषताओं ने यह सोचने पर मजबूर किया है कि इससे जिन लोगों को आर्थिक लाभ पहुँचा है वे संदेह के पात्र हो गये है। कइयों का यह मानना था कि दशाश्वमेध घाट पर बड़ी–बड़ी आरती के जरिये धर्म के क्षेत्र में नये किस्म की ठेकेदारी को आकार दिया जा रहा है। वे प्रशासन के लिये घाट और पर्यटकों के हितों के प्रतिनिधि बन गये हैं, जब कि वास्तविकता यह है कि बनारस के घाट गंगाजी की रम्य पवित्रता और खुले समाज के आत्म संयम के महान उदाहरण रहे हैं। इस संदर्भ में कबीर और रैदास को विशेष रूप से याद किया गया।

विद्या आश्रम, सारनाथ, में 10 दिसम्बर 2010 को कई संगठनों ने मिलकर इसी विषय पर बात की थी, वहीं इस दशाश्वमेध घाट की बैठक का निर्णय लिया गया था और यह सोचा गया था कि इन बहसों में जन संगठनों को शामिल किया जाना चाहिये जैसा कि सारनाथ में हुआ भी था। इस बैठक में भी बुद्धिजीवियों तथा संस्थाओं के अलावा बुनकर, कारीगर और किसान संगठनों के प्रतिनिधि आये थे। अधिकांश लोगों ने राजनैतिक पार्टियों के निहित स्वार्थ के खेल और कारपोरेट ताकतों की कब्जे की नीति को रेखांकित करते हुए यह कहा कि ज़रूरत एक ऐसे मंच की है जो स्थानीय हितों के मद्दे नज़र विमर्श करे और इस विमर्श में आम लोगों की राय सीधे शामिल करे। सुझाव आया कि एक साझा ज्ञान मंच बनाया जा सकता है जहाँ समाज में प्रचलित सभी विचारों को स्थान मिले। स्थानीय समाज और जन संगठनों के विचारों को संस्थानपरक विचारों के बराबर का स्थान मिले। इससे वैश्वीकरण के दौर में बढ़ती जा रही विकट समस्याओं के समाधान के नये–नये रास्ते खुलेंगे। बम विस्फोटों की कड़ी को अब 20 साल हो रहे हैं लेकिन न सरकार के पास, न किन्हीं राजनैतिक दलों के पास और न उच्च शिक्षित समाज के पास ही इसका कोई समाधान है। इसलिये हल खोजने के सभी प्रयासों में आम लोगों को उनके ज्ञान यानि लोकविद्या के साथ शामिल किया जाना चाहिये।

भागीदारी

1. गांधीयन इन्स्टीट्यूट ऑफ स्टडीज़
2. विद्या आश्रम
3. बुनकर वेलफेअर कमेटी
4. डिबेट सोसायटी
5. भारतीय किसान यूनियन
6. प्रेरणा कला मंच
7. अस्मिता
8. पहल
9. मानव अधिकार जन निगरानी समिति
10. आशा परिवार
11. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय और वसंत कन्या महाविद्यालय के अध्यापक/अध्यापिका
12. समाज के वरिष्ठ सदस्य व सामाजिक कार्यकर्ता
13. घाट पर उपस्थित नागरिक